तेरे आस-पास ही तो हूँ सदा

बाबूजी की 22वी पुण्य तिथि पर दिल से निकले उद्गार

(स्वतंत्र जैन)

रह गई अकेली मैं, हो गई बेसहारा,
मेरा साया चला गया, कर के मुझसे किनारा !
(जैसे नैपथ्य से आवाज़ आती है)
मै तो साथ हूँ तेरे, हर क्षण, हर पल,
तू देख सके या ना देख !
तेरे साथ हूँ यहाँ वहाँ,
दांये भी, बांये भी, ऊपर और नीचे भी !
तेरा साया बन कर तेरे साथ ही चलता हूँ
तू न महसूस करे तो क्या?
तेरी आशा बन कर मै ही तुझे दिलासा देता हूँ,
तू आस खो दे तो क्या?
जीवन तेरा करने को उजला,
राह तेरी सँवारने सदा,
बेचैन हूँ मै कितना,
तू ना समझ सके तो क्या?
मेरी दुआएँ तेरे साथ हैं सदा,
तू सुने या ना सुने तो क्या?
मेरा स्पर्श भी तेरे साथ है सदा,
तू मुझे छू ना सके तो क्या?
मेरी बच्ची !
तू देख सके तो देख,
तेरे आस-पास ही तो हूँ मै सदा !
खुद को निराश करे क्यों?
तेरे ही आस-पास क्यों?
हर नेकी की राह पर चलने वाले के साथ हूँ मै सदा,
मेरे ख्वाबों को जो अपनाता है खुद के लिए !
मर मिटने को जो तत्पर है पर-हित के लिए !
मेरी दर्शायी राह पर चलने का जो करता है सदा प्रयास !
मेरी ईच्छा पूरी करने की, जो सोचता भी है अनायास !
मै हर उस नेक दिल की ईच्छा
पूर्ण करने को, रहता हूँ तत्पर सदा,
मुझे कोई महसूस करे या ना करे !
कोई देख सके या ना सके,
मेरा वचन सुन सके या ना सुने,
मुझे स्पर्श कर सके या ना सके
मै तो साथ हूँ नेक बन्दों के सदा !
तुम महसूस करोगे मुझे यदा कदा !
साथ साथ चलूँगा, साथ साथ रहूँगा !
तेरे आस-पास था, हूँ और सदा रहूँगा !